Maut Ka Zayqa (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 340
Weekly Booklet : 340

तक़रीबन 19 साल पहले का बयान

मौत का ज़ाएक़ा

सफ़हात 19

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

मौत का ज़ाएक़ा[1]

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : "**मौत का ज़ाएक़ा**" पढ़ या सुन ले उस की क़ब्रो आख़िरत की मन्ज़िलें आसान फ़रमा और उस की मां बाप समेत बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّین صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो, बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है । (جامع صغیر، ص87، حدیث: 1406)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस ने ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाया उसे मौत का मज़ा भी चखना है, जो यहां आया है उसे एक दिन यहां से रुख़्सत भी होना है और जिस ने इस दुन्या की रंगीनियों को देखा है उसे

1... आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के होने वाले मुख़्तलिफ़ ऑडियो बयानात को तह़रीरी सूरत में बनाम "**फ़ैज़ाने बयानाते अ़त्तार**" अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "**बयानाते अमीरे अहले सुन्नत**" की त़रफ़ से तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْکَرِیْم ! उन बयानात में से अब शो'बा "**हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़**" 15 शा'बान 1426 हि. मुत़ाबिक़ 15 सितम्बर 2005 ई. को होने वाले एक बयान "मौत का ज़ाएक़ा" को रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर ला रहा है ।

मौत का मन्ज़र भी देखना है । मौत के बारे में कहा जाता है कि "اَلْمَوْتُ بَابٌ كُلُّ نَفْسٍ دَاخِلُهَا، اَلْمَوْتُ قَدَحٌ كُلُّ نَفْسٍ شَارِبُهَا" या'नी मौत एक ऐसा दरवाज़ा है जिस में से हर जानदार ने गुज़रना है, मौत एक ऐसा जाम है जिसे हर शख़्स ने पीना है ।" वाक़ेई ह़क़ीक़त भी येही है कि मौत एक ऐसा जाम है जिस का ज़ाएक़ा हर एक ने चखना है, जैसा कि पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 185 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ﴿كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "हर जान को मौत चखनी है ।"

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** में है : इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** पाक ने हर जानदार पर मौत मुक़र्रर फ़रमा दी है और इस से किसी को छुटकारा मिलेगा और न कोई इस से भाग कर कहीं जा सकेगा । मौत रूह़ के जिस्म से जुदा होने का नाम है और येह जुदाई इन्तिहाई सख़्त तक्लीफ़ और अज़िय्यत के साथ होगी और इस की तक्लीफ़ दुन्या में बन्दे को पहुंचने वाली तमाम तक्लीफ़ों से सख़्त तर होगी । (तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, पारह : 4, आले इमरान, तह़्तल आयह : 185, 2/122)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन्सान को मौत के वक़्त पहुंचने वाली तक्लीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द वाक़िआ़त पढ़िये और अपने लिये इब्रत का सामान कीजिये, चुनान्चे

मन्क़ूल है कि बनी इसराईल ने चेलेन्ज के त़ौर पर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप हमारे लिये ह़ज़रते साम बिन नूह़ को ज़िन्दा कर के दिखाएं । ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : तुम लोग मुझे उन की क़ब्र पर ले चलो । फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बनी इसराईल के साथ ह़ज़रते साम बिन नूह़ की क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और आप عَلَيْهِ السَّلَام ने

अल्लाह पाक से ह़ज़रते साम बिन नूह़ को ज़िन्दा करने की दुआ़ फ़रमाई तो **अल्लाह** पाक ने उन को ज़िन्दा फ़रमा दिया। जब वोह अपनी क़ब्र से निकले तो उन के सर के बाल सफ़ेद थे, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया : येह बुढ़ापा तो आप के ज़माने में नहीं था ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ! जब आप ने मुझे पुकारा और मैं ने आवाज़ सुनी तो मुझे गुमान हुवा कि शायद क़ियामत क़ाइम हो गई है, इस की हैबत से मेरे सर के बाल सफ़ेद हो गए हैं। फिर ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से "मौत" के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने बताया : मौत की कड़वाहट तो अभी तक मुझ से दूर नहीं हुई ह़ालां कि मुझे इस दुन्या से रुख़्सत हुए चार हज़ार साल से ज़ियादा हो गए हैं।

(تفسیر قرطبی، پ3، آل عمران، تحت الآیۃ:49، الجزء:4، 2/1128 ملخصاً)

इस वाक़िए़ से पता चला कि **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام को येह मो'जिज़ा अ़ता फ़रमाया था कि आप عَلَیْہِ السَّلَام मुर्दे ज़िन्दा किया करते थे। येह भी मा'लूम हुवा कि क़ियामत की होलनाकियां ऐसी ख़त़रनाक हैं कि सिर्फ़ इस ख़ौफ़ से कि कहीं क़ियामत तो क़ाइम नहीं हो गई ह़ज़रते साम बिन नूह़ के काले बाल सफ़ेद हो गए। नीज़ येह भी पता चला कि मौत का ज़ाएक़ा इतना कड़वा है कि इन्तिक़ाल के चार हज़ार साल से ज़ाइद का अ़र्सा गुज़रने के बा'द भी ह़ज़रते साम बिन नूह़ से इस की कड़वाहट दूर न हुई थी।

मरने के बा'द भी मौत की गरमी

मेरे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार इर्शाद फ़रमाया : बनी इसराईल का एक गुरौह एक क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो उन्हों ने

आपस में मश्वरा किया कि क्यूं न हम यहां दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर **अल्लाह** पाक से येह दुआ़ मांगें कि वोह हमारे लिये किसी एक मुर्दे को ज़िन्दा कर दे ताकि वोह हमें मौत के ह़ालात बताए, चुनान्चे उन्हों ने नमाज़ पढ़ी और फिर दुआ़ मांगने लगे, अभी दुआ़ जारी थी कि इस दौरान उन क़ब्रों में से एक ऐसा शख़्स जिस की दोनों आंखों के दरमियान सज्दे का निशान नुमायां था, वोह अपनी क़ब्र से सर बाहर निकाल कर कहने लगा : आप लोग मुझ से क्या चाहते हो ? मुझे इन्तिक़ाल किये हुए 100 साल गुज़र चुके हैं लेकिन अब तक मौत की गरमी मुझ से दूर नहीं हुई, तुम मेरे लिये दुआ़ करो कि **अल्लाह** पाक मुझे मेरी पहली ह़ालत पर लौटा दे। (الزہد لامام احمد، ص44، حدیث:88 ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मौत की गरमी कितनी देर पा है कि इन्तिक़ाल के 100 साल बा'द भी बाक़ी है। देखिये ! अगर हमें कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो उस का असर कुछ ही अ़र्से में ख़त्म हो जाता है लेकिन मौत के वक़्त पहुंचने वाली तक्लीफ़ का असर सेंकड़ों साल तक बाक़ी रहता है लिहाज़ा अ़क़्लमन्दी येही है कि हम मौत को कसरत के साथ याद करें और दुन्या में रह कर मौत और इस के बा'द की तय्यारी करें। हम आए दिन सुनते रहते हैं कि फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया और फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया लेकिन हमें कोई ख़ास इब्रत ह़ासिल नहीं होती, इसी त़रह़ जब हमारी क़ब्रिस्तान ह़ाज़िरी होती है तब भी हम इब्रत ह़ासिल नहीं करते हालां कि क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी का अस्ल मक़्सद इब्रत ह़ासिल करना है, जैसा कि ह़दीसे पाक में है : मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या से बे रग़्बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है। (سنن ابن ماجہ، 2/252، حدیث:1571) हम

क़ब्रिस्तान जाते हैं तो ख़ौफ़े ख़ुदा से हमारे आंसू नहीं निकलते जब कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बार एक क़ब्र के पास बैठ कर इतना रोए कि चश्माने अक़्दस (मुबारक आंखों) से निकलने वाले मुबारक आंसूओं से मिट्टी नम हो गई, चुनान्चे

मुबारक आंसूओं से मिट्टी नम हो गई

हज़रते बराअ बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि हम नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के कनारे बैठे और इतना रोए कि आप की चश्माने अक़्दस से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम हो गई। फिर इर्शाद फ़रमाया : ऐ भाइयो ! इस (क़ब्र) के लिये तय्यारी करो। (ابن ماجہ،4/466،حدیث:4195)

आंसूओं से दाढ़ी तर हो जाती

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم के हालात में भी ऐसे वाक़िआत मिलते हैं कि जब वोह क़ब्रिस्तान जाते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे के सबब ख़ूब रोया करते थे, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की दाढ़ी तर हो जाया करती थी। किसी ने अ़र्ज़ की : (ऐ अमीरुल मुअमिनीन !) आप जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र करते हैं तो नहीं रोते और क़ब्र के पास क्यूं रोते हैं ? आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : यक़ीन रखो कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है, अगर इस से नजात मिल गई तो इस के बा'द की मन्ज़िलें इस से ज़ियादा आसान होंगी और अगर इस से नजात न मिली तो इस के बा'द की मन्ज़िलें इस से ज़ियादा सख़्त होंगी। और **रसूलुल्लाह**

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि क़ब्र से बढ़ कर ख़ौफ़नाक मन्ज़र कभी मैं ने देखा ही नहीं । (ترمذی،4/138،حدیث:2315)

आंसूओं से इमामा भीग जाता

मश्हूर व बा कमाल मुहद्दिस हज़रते यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه क़ब्रों के पास जा कर फ़रमाया करते कि ऐ क़ब्र के गढ़े में दफ़्न हो जाने वालो ! और ऐ तन्हाई में रहने वालो ! और ऐ ज़मीन के अन्दरूनी हिस्से से उन्सियत रखने वालो ! काश ! मुझे ख़बर हो जाती कि मैं तुम्हारे कौन से आ'माल पर ख़ुश ख़बरी हासिल करूं ? और मैं तुम में से कौन से भाई पर रश्क करूं ? येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस क़दर रोते कि आंसूओं से आप का इमामा भीग जाता और आप जब भी किसी क़ब्र को देख लेते तो इतने ज़ोर से रोने की आवाज़ निकालते कि जैसे बैल चीख़ा करता है। (احیاء العلوم،5/238)

सारी रात क़ब्रिस्तान में रोते रहते

हज़रते ईसा बिन उमर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते अम्र बिन उत्बा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपने घोड़े पर सुवार हो कर रात को क़ब्रिस्तान जाते और वहां खड़े हो कर कहते : ऐ क़ब्र वालो ! आ'माल नामे लपेट दिये गए और आ'माल उठा लिये गए, फिर अपने क़दमों पर सर झुकाए रोते रहते यहां तक कि सुब्ह हो जाती और वापस आ कर नमाज़े फ़ज्र में शरीक हो जाते ।

(حلیۃ الاولیاء،4/173،رقم:5159)

हमारी हालते ज़ार !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ जब क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले जाते तो ख़ौफ़े ख़ुदा से किस क़दर रोते जब कि हमारी हालते ज़ार येह है कि हम जनाज़ों के साथ हंसते हंसते क़ब्रिस्तान जाते और

www.dawateislami.net

हंसते हंसते वापस लौट आते हैं। एक दौर वोह था कि मुसल्मान जब किसी जनाज़े के साथ जाते तो सारे अपने मुंह पर कपड़ा डाले अपनी मौत को याद कर के रो रहे होते थे कि जिस त़रह़ आज येह मरने वाला हमारे कन्धों पर सुवार हो कर क़ब्रिस्तान चला है कल हमें भी इसी त़रह़ क़ब्रिस्तान ले जाया जाएगा, वोह सब इस क़दर ग़मज़दा होते कि अगर कोई ता'ज़ियत करना चाहता तो सब को ग़मज़दा देख कर उसे येह पता नहीं चल पाता था कि मय्यित का वारिस कौन है ? चुनान्चे ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : एक दौर था कि जब कोई जनाज़ा जा रहा होता था तो जनाज़े में जिस को देखो वोह मुंह पर कपड़ा डाले रो रहा होता था और अगर कोई अजनबी ता'ज़ियत करना चाहता तो उसे पता नहीं चलता था कि वोह किस से ता'ज़ियत करे ? (کیمیائے سعادت، 397/1) अब भी लोग जनाज़े पर रोते हैं लेकिन हर एक नहीं बल्कि मख़्सूस अफ़राद रोते हैं। शायद ही कोई ख़ौफ़े ख़ुदा या अपनी मौत को याद कर के इस लिये रोता हो कि मरने वाले का क़ब्र में क्या बनेगा ? आज कल आ़म तौ़र पर लोग मरने वाले की मह़ब्बत ही में रोते हैं । याद रखिये ! जनाज़े हमारे लिये ख़ामोश मुबल्लिग़ की ह़ैसिय्यत रखते हैं। जो कुछ वोह ज़बाने ह़ाल से कह रहे होते हैं इस की तरजुमानी किसी ने क्या ख़ूब की है :

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो *मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं*

क़ब्र का मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है

देखिये ! क़ब्र का मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, अगर हम क़ब्र में पेश आने वाले मुआ़मलात के बारे में सह़ीह़ मा'नों में ग़ौरो फ़िक्र करें तो हमारी सारी मस्ती उतर जाए लेकिन हम ऐसा नहीं करते । देखिये ! अगर चन्द

लोग किसी को गन पोइन्ट पर पकड़ के ले जाएं और फिर उसे किसी गढ़े के पास खड़ा कर के कहें : हम तुम्हें न तो गोली मारेंगे और न ही तुम्हारा गला घोंटेंगे अलबत्ता कुछ देर के लिये इस गढ़े में डाल कर इसे क़ब्र की त़रह़ बन्द कर देंगे। ऐसी सूरत में शायद उस के लिये गढ़े में बन्द करने का सदमा गोली मारने के सदमे से ज़ियादा होगा और वोह येह सोचेगा कि पता नहीं इस तंग और तारीक गढ़े में मुझ पर क्या गुज़रेगी ? याद रखिये ! क़ब्र का मुआ़मला कुछ देर के लिये गढ़े में बन्द कर देने के मुआ़मले से कहीं ज़ियादा सख़्त है। देखिये ! जब किसी का इन्तिक़ाल हो जाता है तो मरने वाला ग़ुस्ल देने और कफ़न पहनाने वालों को देख रहा होता है, उसे येह भी मह़सूस होता है कि अब लोग मुझे अपने कन्धों पर उठा कर क़ब्रिस्तान ले जा रहे हैं और उसे येह भी पता चल रहा होता है कि अब लोग "इधर से पकड़ो और उधर से पकड़ो" के ना'रे लगा कर मुझे अंधेरी क़ब्र में उतार रहे हैं मगर येह सब कुछ पता चलने के बा वुजूद वोह बोलने से क़ासिर होता है। फिर मुर्दे को क़ब्र में रखने के बा'द हमारे यहां येह ए'लान होता है कि "क़ुल की मिट्टी दो" तो लोग थोड़ी थोड़ी मिट्टी जम्अ़ कर के देते हैं जिसे ह़ुसूले बरकत के लिये क़ब्र में डाल दिया जाता है, फिर लोग फट्टे या पथ्थर की सिलें रख कर क़ब्र को बन्द करने लगते हैं और जब आख़िरी सिल या फट्टा रखा जाता है तो क़ब्र में घुप अंधेरा हो जाता है, अब लोग क़ब्र पर इस एह़तियात़ के साथ मिट्टी डालते हैं कि कहीं से भी मा'मूली सा सूराख़ खुला न रह जाए, इसी दौरान बा'ज़ लोग चिल्ला कर कहते हैं कि इधर मिट्टी डालो यहां सूराख़ है तो यूं आख़िर कार लोग मनों के ह़िसाब से मिट्टी डाल कर क़ब्र को मुकम्मल त़ौर पर बन्द कर देते हैं और फिर दुआ़ मांग कर

अपने अपने घरों की त़रफ़ रवाना हो जाते हैं। आह ! मरने वाला येह सब कुछ देख रहा होता है, यहां तक कि जब लोग उसे अंधेरी क़ब्र में तन्हा छोड़ कर अपने घरों का रुख़ कर रहे होते हैं तो वोह उन के क़दमों की आवाज़ भी सुनता है, चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : "मुर्दा, दफ़्न कर के जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है।" (الزہد لابن المبارک،ص41،حدیث:163 ملخصاً) फिर उस की क़ब्र में मुन्कर नकीर की आमद होती है और सुवालात व जवाबात का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है। फिर मरने वाले को उस के अच्छे बुरे आ'माल के मुत़ाबिक़ जज़ा व सज़ा दी जाती है मसलन अगर मरने वाला مَعَاذَاللّٰہ चोरी, शराब नोशी या ज़िनाकारी में मुब्तला हो कर बिग़ैर तौबा किये मरा था तो अब उस की क़ब्र में दो सांप भेज दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते हैं, चुनान्चे

दो सांप नोच नोच कर गोश्त खाएंगे

ह़ज़रते मसरूक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब नोशी या ज़िना में मुब्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 5/476،حدیث:257ملخصاً) इसी त़रह़ अगर मरने वाला ख़ियानत करने वाला हुवा तो उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी, चुनान्चे

चादर आग बन कर जला रही है

ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक रोज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान "बक़ीए़ ग़रक़द" के क़रीब से गुज़रे तो फ़रमाया : उफ़, उफ़, उफ़। उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मैं अकेला ही था। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्या बात है ? आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने इस क़ब्र वाले को फुलां क़बीले पर आ़मिल (या'नी ज़कात वुसूल करने के लिये) मुक़र्रर किया था। उस वक़्त इस ने एक चादर में ख़ियानत की थी और अब मैं देखता हूं कि वोही चादर आग बन कर इसे जला रही है।

(نسائی،ص150،حدیث:859ملخصاً)

चोरी करने, शराब पीने और बदकारी में मुब्तला होने वाले ग़ौर करें कि अगर वोह बिग़ैर तौबा किये मर गए और **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी ले कर क़ब्र में पहुंचे तो उन पर एक नहीं दो सांप मुसल्लत़ कर दिये जाएंगे जो उन का गोश्त नोच नोच कर खाते रहेंगे और उन के वोह दोस्त जो उन से पैसे बटोर बटोर कर शराबें पीते थे उन्हें क़ब्र में तन्हा छोड़ कर अपने घरों को चले जाएंगे। इसी त़रह़ ख़ियानत करने वाले सोचें कि अगर वोह भी बिग़ैर तौबा किये इस दुन्या से रुख़्सत हो गए और फिर ख़ियानत करने की वज्ह से उन की क़ब्र में आग भड़का दी गई तो उन का क्या बनेगा ? लिहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि अभी से तौबा कर ली जाए वरना ख़ुदा की क़सम ! क़ब्र का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो पाएगा। हो सकता है शैत़ान आप को लम्बी उ़म्र पाने और ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद दिलाए और अभी तौबा न करने पर उक्साए तो याद रखिये ! अगर आप लम्बी उ़म्र पाने की उम्मीद पर जिये भी तो कितना जियेंगे ? ज़ियादा से ज़ियादा 60 या 70 साल ज़िन्दा रह लेंगे कि आ़म त़ौर पर बन्दा इतना अ़र्सा ही ज़िन्दा रह पाता है और फिर मौत का शिकार हो कर अंधेरी क़ब्र में उतर जाता है। याद रहे ! 60 या 70 साल ज़िन्दा रहने की भी कोई गारन्टी नहीं क्यूं कि एक दिन का बच्चा भी तो

मरता ही है। अगर आप बोलें कि हमारा जिस्म वरज़िशी है, हम कराटे का फ़न भी जानते हैं, हमें अस्लहा़ चलाना भी आता है लिहाज़ा सिह़ह़त मन्द होने और मज़बूत़ जिस्म रखने की वज्ह से हमें अभी मौत कहां आएगी ? तो याद रखिये ! आप की ज़िन्दगी का कोई भी मुह़ाफ़िज़ नहीं है और जब मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाते हैं तो कोई उन का रास्ता नहीं रोक सकता, **अल्लाह** न करे अगर अभी ज़ल्ज़ला आ जाए तो हज़ारों बल्कि लाखों लोग ज़मीन में दफ़्न हो जाएंगे, आए दिन दुन्या में सैलाब, ज़ल्ज़ले और क़ुदरती आफ़ात आती रहती हैं जिन से बन्दे को न सिह़ह़त बचा पाती है और न जवानी और अस्लहा़, यूं देखते ही देखते बन्दा मौत के घाट उतर जाता है।

मौत ठहरी आने वाली आएगी जान ठहरी जाने वाली जाएगी
रूह़ रग रग से निकाली जाएगी तुझ पे इक दिन ख़ाक डाली जाएगी
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर
मौत आई पहलवां भी चल दिये ख़ूब सूरत नौ जवां भी चल दिये
क़ाफ़िले के क़ाफ़िले रुख़्सत हुए ख़ाक में सारे के सारे मिल गए
क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार! मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख मैं हूं अंधेरी कोठड़ी तुझ को होगी मुझ में सुन वह़शत बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा हां ! मगर आ'माल लेता आएगा
पहलवानों को पछाड़ा मौत ने खेल कितनों का बिगाड़ा मौत ने
हाथी जैसे भी पछाड़े मौत ने कैसे कैसे घर उजाड़े मौत ने

अफ़्सोस ! हमें मौत का एह़सास नहीं होता

अफ़्सोस ! हमें मौत का एह़सास नहीं होता और हम सिर्फ़ रस्मी तौ़र

पर बयान सुन कर मुन्तशिर हो जाते हैं। अगर जानवरों को मौत के बारे में इतना मा'लूम होता जितना हमें मा'लूम है तो कोई जानवर मोटा ताज़ा न होता, चुनान्चे सरवरे ज़ीशान, दो जहां के सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है : मौत के बारे में जो कुछ तुम्हें मा'लूम है अगर जानवरों को मा'लूम हो जाए तो तुम उन में से किसी फ़र्बा जानवर को न खा सको। (شعب الایمان، 7/353، حدیث:10557) या'नी जानवर मौत के ख़ौफ़ से दुबले और पतले हो जाते लेकिन इन्सान मौत से बे ख़ौफ़ हो कर हाथी का बच्चा बन कर घूमता, ख़ूब खाता पीता, जान बनाता और हंस हंस के गुनाह करता है ह़ालां कि जो हंसते हुए गुनाह करेगा वोह रोते हुए जहन्नम में दाख़िल होगा, जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जो हंसता हुवा गुनाह करता है वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा। (مکاشفۃ القلوب، ص275)

अभी आप ने येह ह़दीसे पाक पढ़ी कि "मौत के बारे में जो कुछ तुम्हें मा'लूम है अगर जानवरों को मा'लूम हो जाए तो तुम उन में से किसी फ़र्बा जानवर को न खा सको" इस ज़िम्न में एक ऊंट का वाक़िआ़ पढ़िये और अपने लिये इ़ब्रत का सामान कीजिये, चुनान्चे

मौत की फ़िक्र से ऊंट की मस्तियां जाती रहीं

ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام एक बार ऊंटों के रेवड़ के पास से गुज़रे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि उन में से एक ऊंट बड़ी मस्तियां कर रहा है, कभी किसी ऊंट को अपना सर दे मारता है और कभी किसी ऊंट को काटने के लिये दौड़ता और उस पर झपटता है। आप عَلَيْهِ السَّلَام उस ऊंट के क़रीब गए और उस के कान में फ़रमाया : اِنَّكَ مَيِّتٌ या'नी तुझे मरना है। येह फ़रमा कर ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام आगे तशरीफ़ ले गए,

अब उस ऊंट पर मौत की ऐसी फ़िक्र सुवार हुई कि उस ने खाना पीना छोड़ दिया, उस की सारी मस्तियां जाती रहीं और वोह दुबला पतला हो गया। चन्द दिन बा'द ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام जब दोबारा वहां से गुज़रे तो देखा कि वोही ऊंट दुबला पतला हो चुका है और तमाम ऊंटों से अलग थलग एक जगह खड़ा है। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चरवाहे से उस ऊंट की ह़ालते ज़ार के बारे में पूछा तो चरवाहे ने अ़र्ज़ की : मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं कि इस ऊंट के पास से एक शख़्स गुज़रा था, जिस ने इस के कान में कोई ऐसी बात कही कि उस के बा'द से इस ने खाना पीना छोड़ दिया और अब येह सब ऊंटों से अलग थलग हो कर एक जगह सुस्त खड़ा रहता है।

(نزہۃ المجالس،1/85،بتغیرقلیل)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ऊंट जो एक जानवर है उसे जब मौत के बारे में पता चला तो उस ने खाना पीना छोड़ दिया और उस की सारी मस्तियां जाती रहीं ह़ालां कि इस के लिये न नज़्अ़ की सख़्तियां हैं और न ही क़ब्र का अ़ज़ाब और जहन्नम की होलनाकियां हैं, अलबत्ता बा'ज़ जानवर जहन्नम में भेजे जाएंगे लेकिन अ़ज़ाब पाने के लिये नहीं बल्कि अ़ज़ाब देने के लिये और उन्हें वहां कोई तक्लीफ़ न होगी। (تفسیر کبیر، پ30،النبأ، تحت الآیۃ:40،11/27 ملخصاً) एक त़रफ़ तो मौत के ख़ौफ़ से जानवरों की येह ह़ालत है जब कि दूसरी त़रफ़ हम इन्सानों और मुसल्मानों की येह सूरते ह़ाल है कि इस बात का यक़ीन होने के बा वुजूद ग़फ़्लत का शिकार हैं कि हमें मौत आएगी, क़ब्र में पहुंचाएगी और अच्छे बुरे आ'माल का बदला दिलाएगी। अगर्चे कभी कभार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रिक़्क़त अंगेज़ बयानात सुन कर हमें अपनी मौत का एह़सास होता है मगर वोह जल्द

ही ख़त्म हो जाता है। बा'ज़ लोग सर झुका कर तवज्जोह से बयान सुनते और अपने गुनाहों को याद कर के कुढ़ते हैं मगर बयान ख़त्म हुए अभी थोड़ा सा वक़्त गुज़रता है तो वोह ह़स्बे मा'मूल अपने दोस्तों के साथ ख़ूब हंसी मज़ाक़ कर रहे होते हैं। ऐसे लोग आ़म तौ़र पर अगले दिन नमाज़े फ़ज्र भी नहीं पढ़ते, अगर जोश में आ कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ लेते हैं तो ज़ोहर नहीं पढ़ते और अगर अगले दिन सारी नमाज़ें पढ़ लेते हैं तो दूसरे दिन नमाज़े फ़ज्र के लिये नहीं उठते, यूं वोह दोबारा ग़फ़्लत का शिकार हो जाते हैं।

क़ब्रें अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम जब क़ब्रिस्तान जाते हैं तो हमें सब क़ब्रें ऊपर से ब ज़ाहिर एक जैसी मा'लूम होती हैं कि सब एक ही त़रह़ के मिट्टी के तोदे होते हैं लेकिन याद रखिये ! येह अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं, क्यूं कि अन्दर से किसी की क़ब्र बाग़ो बहार और किसी की आग ही आग होती है, कोई अपनी क़ब्र में **अल्लाह** पाक की ने'मतों के मज़े लूट रहा होता है और कोई अ़ज़ाब का शिकार होता है, चुनान्चे ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सिमाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक बार क़ब्रिस्तान को देख कर फ़रमाया : ऐ लोगो ! इन क़ब्रों की ख़ामोशी से धोका मत खाना कि येह चुपचाप हैं, न ! न ! इन के अन्दर बसेरा करने वाले सब एक जैसे नहीं, इन में से बा'ज़ बहुत तक्लीफ़ में हैं और बा'ज़ राह़त में हैं। (اہوال القبور، ص226ملخصاً) हर अ़क़्लमन्द को चाहिये कि क़ब्र में दाख़िल होने से पहले इसे बहुत ज़ियादा याद करता रहे, ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इर्शाद है : जो शख़्स क़ब्र को बहुत याद करेगा तो वोह उसे जन्नत के एक बाग़ की मानिन्द पाएगा और जो इस से ग़ाफ़िल हो गया वोह उसे जहन्नम का गढ़ा पाएगा। (احیاء العلوم،5/238)

आह ! हम ग़ाफ़िलीन का क्या बनेगा ! हमें तो मौत का ज़िक्र सुनना ही पसन्द नहीं है, आप को बहुत से लोग ऐसे भी मिलेंगे जो येह कह कर सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में नहीं आते कि दा'वते इस्लामी वाले मौत, मौत कर के हमारा मूड ख़राब कर देते हैं। ऐसों के लिये अ़र्ज़ है कि हमारे अस्लाफ़ भी अपने ख़ुत़्बों में लोगों को मौत की याद दिलाया करते थे, चुनान्चे

ऐ अल्लाह के बन्दो ! मौत को याद रखो !

अमीरुल मुअमिनीन मौला मुश्किल कुशा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ ने एक बार कुछ इस त़रह़ ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मौत को याद रखो और इस के लिये तय्यारी करो कि इस से बचना ना मुम्किन है, अगर तुम इस से मुक़ाबला करोगे तो येह तुम्हें दबोच लेगी और भागना चाहोगे तो पकड़ लेगी। मौत तुम्हारी पेशानी में पैवस्त कर दी गई है लिहाज़ा अ़ज़ाबे मौत से नजात का कोई ज़रीआ़ तलाश करो। मौत की त़रफ़ पेश क़दमी करो कि क़ब्र तुम्हारी मुन्तज़िर है और वोह तुम्हें जल्द से जल्द अपने पास बुला रही है। याद रखो ! क़ब्र या तो जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा। (المستطرف،1/107 ملخصًا)

याद रखिये ! अगर हम आज मौत से डर कर नमाज़ी बन गए और हम ने गुनाहों से कनारा कशी इख़्तियार कर ली तो येह हमारे लिये अच्छा है कि कल हमें क़ब्र में राह़त मिलेगी वरना अगर आज हम मौत से बे फ़िक्र हो कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे तो मरने के बा'द क़ब्र में हमारे लिये ख़ौफ़ ही ख़ौफ़ होगा। देखिये ! मरने के बा'द की ज़िन्दगी मरने से पहले की ज़िन्दगी से ज़ियादा पावरफ़ुल होती है, मरने के बा'द सुनने और देखने का अ़मल भी बहुत ज़ियादा बढ़ जाता है कि मरने से पहले अगर हम

www.dawateislami.net

क़ब्र में उतर कर देखें तो हमें क़ब्र के बाहर का मन्ज़र नज़र नहीं आएगा जब कि मरने के बा'द क़ब्र बन्द होने के बा वुजूद मुर्दे को बाहर का मन्ज़र नज़र आता है और कौन से लोग आ जा रहे हैं वोह सब देखता है और उन की आवाज़ भी सुनता है जभी तो हम क़ब्रिस्तान जा कर मुर्दों को सलाम करते और येह कहते हैं : ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْر، يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ، اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَر या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम लोग हम से पहले चले गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।''

याद रखिये ! सलाम उसे किया जाता है जो सुनता हो और जवाब भी देता हो, जैसा कि ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ब्रिस्तान में जा कर पहले सलाम करना फिर येह अ़र्ज़ करना (اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ) सुन्नत है, इस के बा'द अहले क़ुबूर को ईसाले सवाब किया जाए। इस से मा'लूम हुवा कि मुर्दे बाहर वालों को देखते पहचानते हैं और उन का कलाम सुनते हैं वरना इन्हें सलाम जाइज़ न होता क्यूं कि जो सुनता न हो या सलाम का जवाब न दे सकता हो उसे सलाम करना जाइज़ नहीं, देखो सोने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले को सलाम नहीं कर सकते। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/524)

पता चला कि क़ब्रों वाले हमारा सलाम सुनते भी हैं और इस का जवाब भी देते हैं। (شعب الایمان، 7/17، حدیث:9296 ملخصاً) याद रहे ! सिर्फ़ मुसल्मान ही नहीं बल्कि कुफ़्फ़ार भी मरने के बा'द सुनते और देखते हैं। नीज़ आ़म मुर्दों के मुक़ाबले में बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم अपनी क़ब्रों में ज़ियादा दूर से सुनते और देखते हैं मसलन अगर हम यहां से बग़दाद वाले मुर्शिद, ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को पुकारें तो वोह हमारी आवाज़ सुन लेंगे क्यूं कि वोह

अल्लाह के वलियों के सरदार हैं। देखिये ! अब टेली कम्यूनीकेशन इतना मज़्बूत़ हो गया है कि हम सात समुन्दर पार अपने दोस्त से बातचीत कर लेते हैं और वोह हमारी आवाज़ सुन लेता है ह़ालां कि बीच में तारें वग़ैरा नहीं होतीं तो जब साइन्सी कनेक्शन इतना पावरफ़ुल है तो रूह़ानी कनेक्शन का आ़लम क्या होगा !

मरने के बा'द सब की सुनने और देखने की त़ाक़त बढ़ जाती है और मरने वाला अपनी क़ब्र पर आने वालों को देख भी रहा होता है और उन की आवाज़ भी सुन रहा होता है। देखिये ! अगर हमें क़ब्र में न अ़ज़ाब दिया जाए और न हमारी क़ब्र में सांप बिच्छू आएं सिर्फ़ हमें क़ब्र में बन्द कर दिया जाए तो क़ियामत क़ाइम होने तक हज़ारों साल का अ़र्सा हम अंधेरी क़ब्र में कैसे गुज़ारेंगे ! हम क़ब्र में न किसी दोस्त के पास जा सकेंगे और न किसी को अपने पास बुला सकेंगे, न हमारी मां आएगी और न हमारा बाप आएगा, अगर बाप आएगा भी तो बेचारा फ़ातिह़ा पढ़ कर और इधर उधर क़ब्रों को देख कर वापस चला जाएगा और हम उसे अपनी क़ब्र में ह़सरत भरी नज़रों से देखते रह जाएंगे। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! अगर हमें किसी आ़लीशान बंगले में क़ैद कर दिया जाए और वहां हमें ज़िन्दगी की ज़रूरत की हर चीज़ दे दी जाए, मसलन बत्तियां, पंखे, एरकन्डीशन रूम, नर्म नर्म गदेले, खाने पीने की अश्या वग़ैरा सब सहूलियात मुयस्सर हों मगर उस बंगले में हम अकेले हों और हमारे पास किसी के आने जाने पर पाबन्दी हो तो यक़ीन मानिये ! हम उस में एक दो या तीन दिन ठहर पाएंगे बल्कि हम में से बा'ज़ तो ऐसे भी होंगे जो एक दिन भी तन्हा रहना बरदाश्त न कर सकेंगे। देखिये ! जब ऐसे आसाइश वाले बंगले में हम अकेले एक दिन

गुज़ारने के लिये तय्यार नहीं तो फिर क़ब्र में सेंकड़ों साल अकेले कैसे रह पाएंगे ! याद रखिये ! आज हम दुन्या की रंगीनियों में फंस कर क़ब्र को भूले बैठे हैं जब कि कहा जाता है कि क़ब्र रोज़ाना पांच मरतबा पुकार कर कहती है : ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है जब कि मेरा पेट तेरा ठिकाना है। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा। ऐ आदमी ! तू मुझ पर ह़राम खाता है, अ़न्क़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर ख़ुशियां मनाता है, अ़न्क़रीब मुझ में ग़मगीन होगा। (تنبیہ الغافلین، ص23ملخصًا)

ख़ुदा की क़सम ! इस क़ब्र की पुकार में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है, ऐ काश ! हमें इ़ब्रत नसीब हो जाए और इस से पहले कि येह शोर मचे फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया है, जल्दी जल्दी ग़ुस्साल को बुला लाओ, जल्दी जल्दी कफ़न ले आओ और जल्दी जल्दी क़ब्र खोदने का इन्तिज़ाम करो। फिर ग़ुस्साल तख़्ता उठाए चला आ रहा हो, हमें ग़ुस्ल दिया जा रहा हो, कफ़न पहनाया जा रहा हो, हमारे लिये क़ब्र खोदने का इन्तिज़ाम किया जा रहा हो और फिर हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाए तो इस से पहले ही मौत की याद को पेशे नज़र रखिये और जल्दी जल्दी अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी   क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

मौत को याद रखने के त़रीक़े

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मौत की याद को पेशे नज़र रखने के चन्द त़रीक़े पेशे ख़िदमत हैं, ग़ौर से पढ़िये और अपने लिये मौत की याद का सामान कीजिये : ﴾1﴿ जनाज़ों में शिर्कत कीजिये ﴾2﴿ क़ब्रिस्तान जाने

की आ़दत बनाइये ﴾3﴿ मौत के मौज़ूअ़ पर होने वाले बयानात सुनिये ﴾4﴿ इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये ﴾5﴿ आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये, मदनी क़ाफ़िलों में मौत की तय्यारी के ह़वाले से वा'ज़ो नसीह़त का सिल्सिला भी होता है तो यूं आप को मौत याद रहेगी और जब मौत याद रहेगी तो आप का गुनाहों से बचने का ज़ेह्न भी बनेगा कि ह़दीसे पाक में है : "كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا या'नी मौत नसीह़त के लिये काफ़ी है।" (شعب الایمان، 7/353،حدیث:10556) लिहाज़ा हर महीने कम अज़ कम तीन दिन सुन्नतें सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार करने की निय्यत कर लीजिये, अपना नमाज़ों का भी ज़ेह्न बना लीजिये और सच्ची निय्यत कीजिये कि आज के बा'द اِنْ شَآءَ الله हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, हमारा माहे रमज़ान का कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा, हम फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने से बचेंगे, हम वालिदैन को नहीं सताएंगे, मुसल्मानों की चुग़्लियां नहीं खाएंगे, मुसल्मानों की ग़ीबतों, तोह्मतों और इल्ज़ाम तराशियों से बचेंगे, मुसल्मानों की आबरू रेज़ी नहीं करेंगे और उन के ऐ़ब छुपाएंगे। नीज़ येह भी निय्यत कर लीजिये कि हम दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत करेंगे।

अल्लाह पाक हमें ख़ूब ख़ूब नेकियां करने, गुनाहों से बचने और मरने से पहले क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ علٰی مُحَمَّد

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه/ खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज अबू उसैद उबैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه الْكَرِيْم! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से खुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)